



# प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 7 अंक 2

[www.csir.res.in](http://www.csir.res.in)

फरवरी 2019

## सीएसआईआर को वर्ष का प्रदर्शक पुरस्कार प्राप्त हुआ

सीएसआईआर को 106वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस - भारत का गौरव (पीओआई) वृहद विज्ञान प्रदर्शनी जिसका केन्द्रीय विषय भविष्य का भारत: विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी था, तथा जिसे 03-07 जनवरी 2019 के दौरान लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एलपीयू) फगवाड़ा, पंजाब में आयोजित किया गया, के अन्तर्गत वर्ष के प्रदर्शक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पांच दिवसीय इस वृहद विज्ञान प्रदर्शनी में नवीनतम प्रौद्योगिकियों, अग्रणी वैज्ञानिक उत्पादों तथा सेवाओं, पथप्रवर्तक अनुसंधान तथा विकास पहल, भारत के सर्वश्रेष्ठ तथा अग्रणी जन तथा निजी क्षेत्रों, केन्द्रीय तथा राज्य के सरकारी विभागों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, शैक्षिक संस्थाओं कॉरपोरेट, रक्षा इत्यादि क्षेत्रों की योजनाओं तथा उपलब्धियों का प्रदर्शन किया गया था।



## सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

**सीआईआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में 12 फरवरी, 2019 को स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया।** इस अवसर पर श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, सचिव, आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि तथा डॉ. शैलेश कुमार अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक, बी. एम.टी.पी.सी., आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

अपने संबोधन में श्री दुर्गा शंकर मिश्रा ने प्रधानमंत्री के नव भारत 2022 के लक्ष्य के विषय में बताते हुए कहा कि हमें 2022 तक एक विकसित भारत का निर्माण करना है जहाँ गरीबी, गन्दगी, भेदभाव, भुखमरी आदि का कोई स्थान न हो; ऐसा देश जो सकल घरेलू उत्पाद और अर्थव्यवस्था के मामले में शीर्ष 5 वैश्विक देशों में हो; जहाँ सभी लोगों को सामान अधिकार और अवसर उपलब्ध हों तथा



दीप प्रज्वलित करते अतिथिगण

सभी के पास एक ऐसा आवास हो जिसमें पर्याप्त सुविधाएं मौजूद हों।

श्री मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री के इस स्वप्न को पूरा करने में सीबीआरआई एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आवास एक मूलभूत आवश्यकता है। जो प्रकृति के हर कोप से मनुष्य की

रक्षा करता है। सभी भारतीयों को आवास प्रदान करने के उद्देश्य से हमारे प्रथम प्रधानमंत्री ने सीबीआरआई की आधारशिला रखी थी।

श्री मिश्रा ने कहा कि आज आवास के क्षेत्र में बढ़ती शहरी जनसंख्या एक मुख्य चुनौती है। अधिकतम ग्रामवासी जो अच्छे अवसरों की तलाश में शहर की ओर पलायन करते हैं-वे अमूमन

अनाधिकृत और अपर्याप्त आवासों का निर्माण करते हैं जिसमें न कोई सुविधा होती है और न ही ये आवास बदलते मौसम का सामना करने के लिए सक्षम हैं। इसी जनसँख्या के लिए उचित एवं किफ़ायती आवास प्रदान करना, सीबीआरआई की लक्षित चुनौती होनी



संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन अध्यक्षीय संबोधन देते हुए



श्री दुर्गा शंकर मिश्रा सभा को सम्बोधित करते हुए



कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिक, कर्मचारी एवं अतिथिगण



श्री दुर्गा शंकर मिश्रा सीबीआरआई “कंस्ट्रक्शन डेमोंस्ट्रेशन पार्क फॉर मास हाउसिंग” का दौरा करते हुए

परिवर्तन के लिए अटल मिशन (अमृत), स्मार्ट सिटी मिशन, आदि की अब तक की उपलब्धियों के विषय में भी विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही उन्होंने नीति आयोग द्वारा चयनित 151 आकांक्षात्मक जिलों के उत्थान में किये गए कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने स्मार्ट सिटी को परिभाषित करते हुए प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए वक्तव्य का हवाला दिया जिससे न्यूनतम क्षेत्रीय उपलब्ध संसाधनों से अधिकतम लाभ उठाया जा सके।

नव भारत में निर्माण क्षेत्र की उपलब्धियों को दर्शाने के उद्देश्य से शुरू होने वाली “कंस्ट्रक्शन टेक्नोलॉजी इंडिया” के विषय में बताते हुए श्री मिश्रा ने कहा कि इस पहल से देश में एक निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का विकास होगा। इसके अंतर्गत देश के 6 कोनों में 6 ओपन लाइव प्रयोगशालों का निर्माण किया जाएगा, जिसमें क्षेत्रों के अनुसार उच्चतम 6 आवास तकनीकियों को चयनित किया जाएगा तथा देशवासियों के लिए उसकी 1000 इकाइयों का निर्माण भी किया जायेगा। यह सब तकनीकियां सभी के अवलोकन हेतु खुली रहेंगी तथा वेबकास्ट, सिलेबस तथा शेड्यूल रेट का भी भाग बनायीं जाएंगी।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने सभी को सीबीआरआई में योगदान के लिए आभार और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि संस्थान ने अपनी इस लम्बी यात्रा में सभी उतार-चढ़ाव का डट कर सामना किया है और भविष्य में भी संस्थान अपने परिश्रम द्वारा देश सेवा में अपना योगदान देता रहेगा।

इस अवसर पर प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ लेख के लिए हीरक जयंती निदेशक पुरस्कार, “स्लोप स्टेबिलिटी असेसमेंट एंड डिज़ाइन

चाहिए।

श्री दुर्गा मिश्रा ने कहा कि स्वतंत्र भारत की ही भांति सीबीआरआई भी अपने 75 वर्ष पूरे करने की ओर अग्रसर है। इसके लिए संस्थान को देश के 800 मिलियन गरीब जनता को किफायती आवास प्रदान करने के लक्ष्य को तीव्रतम गति से कार्य

करते हुए प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई को विभिन्न क्षेत्रों और पर्यावरणों के अनुसार, प्राकृतिक आपदाओं क्षेत्रों के अनुकूल आवास के निर्माण पर ध्यान देना होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा चलाये गए विभिन्न कार्यक्रमों - स्वच्छ भारत, सभी के लिए आवास, शहरी



श्री दुर्गा शंकर मिश्रा संस्थान की अनुसंधान और विकास उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए



संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का अवलोकन करते हुए अतिथिगण

ऑफ़ रेमिडियल मेजर्स फॉर तुंगनाथ टेम्पल एट उत्तराखंड इंडिया : ए केस स्टडी” के लिए श्री मनोजीत सामंता, श्री पीयूष पुनेठा, डॉ. शांतनु सरकार, श्री अजय द्विवेदी और श्री महेश शर्मा तथा “सस्टेनेबल यूटिलाइजेशन ऑफ़ डीइंकिंग पेपर मिल स्लज फॉर द मैन्युफैचर ऑफ़ बिल्डिंग ब्रिक्स” के लिए श्री एस.के. सिंह, सुश्री शिल्पा कुलकणब, श्री विवेक कुमार और श्री प्रभात वशिष्ठ को पुरस्कृत किया गया। समाज पर सर्वाधिक प्रभाव डालने वाले सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी के विकास हेतु हीरक जयंती निदेशक पुरस्कार, प्रोसेस नो हाउ ऑफ़ मैन्युफैचर ऑफ़ बिल्डिंग कंपोनेंट्स दैट इज़ पैवर ब्लॉक्स, टाइल्स एंड ब्रिक्स फ्रॉम कंस्ट्रक्शन एंड डिमोलिशन वेस्ट के लिए डॉ. ऐ.के. मिनोचा, श्री सौमित्र मैती, डॉ. नीरज जैन, सुश्री मोनालिसा बेहेरा और श्री सांथा कुमार;इन्टरपेनेट्रेंटिंग पॉलिमर नेटवर्क (आईपीएन) कोटिंग फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ रिन्फ़ोर्समेंट इन कंक्रीट के लिए डॉ. रजनी लखानी, श्री के. के. अस्थाना, श्री फ्रांसिस चार्ल्स और श्री शाहनवाज़ खान; तथा राउंड बोल्डर्स

मोर्टार (आरबीएम) यूनिट्स फॉर हिल्ली रीजंस के लिए डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. एस.के. पाणिग्रही, श्री जलज पराशर और श्री शुभम सिंघल को पुरस्कृत किया गया। संस्थान में श्री अमन कुमार के संयोजन में ‘वैदिककालीन : विकसित विज्ञान, कल्पना या विस्मर्त सत्य’ विषय पर कार्मिकों के लिए आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री अर्पण माहेश्वरी को प्रथम, श्री सक्षम भारद्वाज को द्वितीय, श्री सुशील कुमार को तृतीय तथा श्री आशीष खरकवाल को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक तथा श्री आलोक गुप्ता, केंद्रीय विद्यालय न.1 ने निर्णायकों की भूमिका निभाई।

संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अश्विनी मिनोचा ने समारोह का संचालन किया तथा मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुवीर सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री चंद्रेश यादव, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, हरिद्वार; श्रीमती निकिता खंडेलवाल, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट, रुड़की; श्रीमती जयश्री गोपालकृष्णन, तथा संस्थान के सेवानिवृत्त कर्मचारी भी

उपस्थित रहे।

सभी गणमान्य अतिथियों ने सीबीआरआई के नवीन “कंस्ट्रक्शन डेमोंस्ट्रेशन पार्क फॉर मास हाउसिंग” का दौरा किया और संस्थान की अनुसंधान और विकास उपलब्धियों की समीक्षा की। प्रदर्शन पार्क में संस्थान द्वारा विकसित - ग्रामीण और शहरी दोनों स्थानों तथा विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त तकनीक, परीक्षण सुविधा, विशेष उपकरण आदि की एक विस्तृत शृंखला प्रदर्शित की गई।

श्री दुर्गा शंकर मिश्रा ने संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन; डॉ. अजीत चतुर्वेदी, निदेशक आईआईटी; सीबीआरआई एवं आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों और प्रोफेसर्स के साथ ग्लोबल हाउसिंग टेक्नोलॉजी चैलेंज इंडिया विषय पर एक बैठक में स्विफ्ट टेक्नोलॉजी ट्रांजिशन प्रयास में सभी की भूमिकाओं, जिम्मेदारियों व उम्मीदों तथा नवाचारों, उद्यमों को बढ़ावा देने और नवीनतम तकनीकी सफलताओं के साथ कदम बनाए रखने के लिए नए इको-सिस्टम के निर्माण पर चर्चा की।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई में दो-दिवसीय विद्यार्थी-वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम



कार्यक्रम में भाग लेने आये विद्यार्थी, शिक्षक एवं गणमान्य अतिथि

**सीएसआईआर-केंद्रीय** भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में 24-25 जनवरी, 2019 को जिज्ञासा कार्यक्रम के तहत एक दो-दिवसीय विद्यार्थी-वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समावेशी और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने, कन्याओं को सशक्त करने, सभी के लिए शिक्षा का महत्व समझाने और आजीवन सीखने के अवसरों के महत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय कन्या दिवस तथा प्रथम संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर 24 जनवरी, 2019 को कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

विशिष्ट अतिथि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई के पदार्थ विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक एच, डॉ. कुलवंत सिंह ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता हेतु लक्ष्य निर्धारण करना अति आवश्यक

है। हमें अपना लक्ष्य निर्धारित कर, आलस्य त्याग कर, पूर्ण निष्ठा व मेहनत के साथ कर्म करना चाहिए। राह में असफलताओं से निराश न होते हुए, पूरी लगन और आशा के साथ निरंतर प्रयास करने से हमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. ए.के. मिनोचा ने संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन की ओर से सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा सभी का मूल अधिकार है और इसकी पूर्ति हेतु भारत सरकार अनेक कार्यक्रम चलाती है। परन्तु उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए हमें स्वयं जिज्ञासु होकर नित नवीन ज्ञान प्राप्ति हेतु तत्पर रहना होगा।

संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं जिज्ञासा कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने सभी का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के

महत्व के बारे में बताया और उनसे सक्रिय भागीदारी, प्रश्न और संवाद के माध्यम से एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए कहा। डॉ. एल.पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने विशिष्ट अतिथि डॉ. कुलवंत सिंह का औपचारिक परिचय दिया।

सीएसआईआर-सिम्फर, क्षेत्रीय केन्द्र, सीबीआरआई कैम्पस, रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक तथा प्रभारी, डॉ. आर के गोयल ने सुरंग अभियांत्रिकी विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की सुरंग, चट्टान समूह की भूवैज्ञानिक जानकारी, उत्खनन प्रणाली तथा प्रभावी पद्धति सुरंग उत्खनन प्रक्रिया, निर्माण उपकरणों, चुनौतियां तथा मुख्य सुरक्षा उपायों के बारे में बताया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुवीर सिंह ने अग्नि अनुसंधान पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लघु चलचित्रों की सहायता से अग्नि



डॉ आर के गोयल सुरंग अभियांत्रिकी विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए



डॉ सुवीर सिंह अग्नि अनुसंधान विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए



डॉ अतुल अग्रवाल सीएसआईआर और सीबीआरआई की वैज्ञानिक यात्रा विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए

आपदा के दौरान अग्नि के प्रसार के समय, मार्ग एवं हानि, मुख्य अग्नि प्रसारक संरचना तत्वों और उनकी अग्नि से सुरक्षा हेतु विकसित अग्नि प्रतिरोधक कांच और उष्ण आघात संरक्षित स्तम्भ जैसे नवीनतम संरचना तत्व प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. अतुल अग्रवाल ने जोर दिया कि हर मनुष्य में कोई सहज गुण होता है जिसे खोज कर निखारा जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे असफलता से दूर नहीं भागें बल्कि उनसे प्रेरणा लें। डॉ. अग्रवाल ने अल्बर्ट आइन्स्टाइन, थॉमस एल्वा एडिसन, मैडम मैरी क्यूरी, सर आइजैक न्यूटन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि महान वैज्ञानिकों के जीवन से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों को विद्यार्थियों के साथ साझा कर उनसे प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। “सीएसआईआर और सीबीआरआई की वैज्ञानिक यात्रा” विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. अतुल अग्रवाल ने बताया कि अनुसंधान एवं विकास की ओर एक अखिल दौर दृष्टिकोण के साथ, सीएसआईआर भारत की विभिन्नता व



डॉ कुलवंत सिंह मानव सेवा में परमाणु अनुसंधान विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए



डॉ एल पी सिंह नैनो प्रौद्योगिकी विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए

विषमता को प्रतिबिंबित करता है।

प्रार्थना सत्र के साथ कार्यक्रम के दूसरे दिन का आरम्भ हुआ। डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टि कोण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रोफेसर डस्टिन की एक ऐसी साइकिल का उदाहरण दिया जो हैंडल दाएं मोड़ने पर बाएँ तथा बाएं मोड़ने पर दाहिनी तरफ मुड़ती थी। युवा विद्यार्थियों से लेकर महान वैज्ञानिकों तक सबने उस साइकिल को चलाने का प्रयत्न किया परन्तु चार कदम की दूरी से अधिक बिना गिरे वे साइकिल नहीं चला पाए। उन्हें इस

साइकिल को चलाना सीखने में चार से छह माह का समय लगा। उसी साइकिल को एक पांच वर्षीय बालक ने आधे घंटे में कुशलता से चलाना सीख लिया। उन्होंने समझाया कि हर चीज हर अनुभव को नई नजर से देखें तो हमारे अनुभव पहले से ज्यादा सुखद हो सकते हैं। कुछ नया सीखने के लिए पुराना भूलना भी आसानी से आना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को एक शांत मन के साथ कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया।

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई के पदार्थ विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक एच



वैज्ञानिकों से वार्ता करते हुए विद्यार्थी



प्रयोगशालाओं का भ्रमण करते हुए विद्यार्थी

डॉ. कुलवंत सिंह ने मानव सेवा में परमाणु अनुसन्धान विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए भाभा परमाणु अनुसन्धान केंद्र द्वारा विभिन्न विज्ञान क्षेत्रों में किये जा रहे कार्यों के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की।

संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, डॉ एल.पी. सिंह ने नैनो प्रौद्योगिकी विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए भवनों में नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग, नैनो तकनीक द्वारा कंक्रीट को मॉडिफाई करने तथा भवनों में लोडिंग कैपेसिटी को अनुकूलित करने के विषय में जानकारी दी। डॉ. सिंह ने बताया कि नैनो प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा सस्ती किन्तु उन्नत और धारणीय तकनीकियों का विकास किया जा रहा है जिससे देश का आर्थिक और सामाजिक विकास निश्चित है।

डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने बौद्धिक

विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विषय पर व्याख्यान देते हुए विद्यार्थियों को अनेक रोचक उदाहरणों द्वारा ज्ञान के महत्त्व के विषय में समझाया। उन्होंने सिकंदर का उदाहरण देते हुए बताया कि दुनिया भर के अमूल्य रत्नों और आभूषणों में से सिकंदर ने एक पुस्तक को अपने सबसे कीमती बक्सों में संभाल के रखना उचित समझा क्योंकि उनका मानना था कि ज्ञान ही दुनिया की सबसे मूल्यवान वस्तु है। उन्होंने विद्यार्थियों को एक सकारात्मक सोच रखने के लिए प्रोत्साहित करते हुए बताया कि विचारों में बहुत शक्ति होती है।

विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विज्ञान, गणित आदि विषयों से प्रश्न पूछे गए। विद्यार्थियों ने संस्थान की प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं का भ्रमण करते हुए संस्थान के अनुसंधान एवं विकास

कार्यों का जीवंत प्रदर्शन और भवन निर्माण सामग्री, प्रौद्योगिकी, अग्नि अभियांत्रिकी और आपदा न्यूनीकरण सहित भवन निर्माण के क्षेत्र के सभी पहलुओं में अपने ज्ञानाधार का विस्तार करने हेतु वैज्ञानिकों से वार्ता की।

समापन समारोह के दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में केंद्रीय विद्यालय न. 1 के अपूर्व और अंशुमान की टीम को प्रथम स्थान के साथ स्वर्ण पदक, आदर्श बाल निकेतन के वचन दास और सौम्या अग्रवाल की टीम को द्वितीय स्थान के साथ रजत पदक, आर्मी पब्लिक स्कूल 2 के अनुज और उत्कर्ष की टीम को तीसरे स्थान के साथ कांस्य पदक तथा आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज की जैनब खान और संजना गौतम की टीम को चौथे स्थान के साथ सांत्वना पदक प्राप्त हुआ। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये गए। डॉ एल.पी. सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में गांधी महिला शिल्प विद्यालय इंटर कॉलेज, आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज, आदर्श बाल निकेतन, आर्मी पब्लिक स्कूल 2 तथा केंद्रीय विद्यालय न.1 के लगभग 400 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के सहित प्रतिभागिता की।



समापन सत्र के दौरान गणमान्य अतिथि

## आईवाईपीटी-2019 : सीएसआईआर-निस्केयर का एक कदम

विज्ञान हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है; जो हर पल, हर जगह हमारे साथ जुड़ा हुआ है। बस इसको महसूस करने की जरूरत है। विज्ञान कितना रोचक और आश्चर्यजनक हो सकता है, इसका पता तभी लगेगा जब हम इसको महसूस करेंगे। आज के समय में हम विज्ञान को भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, खगोल विज्ञान जैसे अन्य कितने ही अलग-अलग विषयों के माध्यम से जानते हैं, जो अपने में ही ज्ञान का पूरा ब्रह्मांड समेटे हुए है। इस ज्ञान को रोचक तरीके से समझना ही आज के समय में अपने आपमें एक बहुत बड़ी चुनौती है। इन चुनौतियों को समाप्त करने के लिए दुनिया भर में कई वैज्ञानिक संस्थाएँ नए-नए तरीके इजाद कर रही हैं।

इसी को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने मंडलीय की आवर्त सारणी के 150 साल पूरे होने पर वर्ष 2019 को “रासायनिक तत्वों की आवर्त सारणी का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष” अर्थात् “आईवाईपीटी-2019” के रूप में मनाने का फैसला लिया है। जिसको पूरे विश्व में अलग-अलग संस्थानों में मनाया जा रहा है।

सीएसआईआर-निस्केयर ने 25 जनवरी 2019 को आईवाईपीटी-2019 के उपलक्ष्य में मुख्य अतिथि डॉ डी के असवाल, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल एवं डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें आवर्तसारणी को बनाने में मंडलीय और मैरीक्यूरी के महत्वपूर्ण योगदान तथा रेडियोएक्टिव पदार्थ की खोज को फ़िल्म, दि मिस्ट्री ऑफ मैटर: अनरुली एलीमेंट्स’ के माध्यम से प्रस्तुत किया।



मंच पर आसीन (बाएं से) डॉ जी महेश, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, डॉ मनोज पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर तथा डॉ डी के असवाल, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ डी के असवाल ने बड़े ही रोचक तरीके से श्रोताओं को विज्ञान में छोटे परमाणुओं से लेकर बड़े-बड़े रेडियोएक्टिव तत्वों की खोज एवं उनके महत्व को समझाया। श्रोताओं से छोटे-छोटे प्रश्नों, जैसे आवर्त सारणी के 118 तत्वों में से कितने प्राकृतिक रूप

से मौजूद है? क्या ब्रह्माण्ड में कुछ है जो बिना परमाणु के बना है? नए परमाणु कैसे बनाये जाते हैं? के माध्यम से रोचक जानकारियां दी।

उन्होंने वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को उनके परिश्रम और उनकी लगन का परिणाम बताते हुए इस बात पर भी प्रकाश



डॉ डी के असवाल, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल व्याख्यान देते हुए

डाला कि कैसे जिज्ञासा से भरे हुए छोटे-छोटे प्रश्नों के परिणामस्वरूप बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं। डॉ असवाल ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, छात्रों, शिक्षकों को भविष्य में भारत में नई वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय छात्रों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है परन्तु हमारी शिक्षा व्यवस्था एवं ग्रामीण अंचलों में संसाधनों के अभाव के चलते उन प्रतिभाओं को सही मंच नहीं मिल रहा है। अगर भारत को विज्ञान के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने हैं तो इस व्यवस्था में जरूरी बदलाव लाने की आवश्यकता है। समय-समय पर युवाओं, विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों के बीच परस्पर संवाद, संगोष्ठी एवं बौद्धिक चर्चाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि ज्ञान, नए विचारों एवं नवाचारों का प्रभावी रूप से आदान प्रदान हो सके।

इसी के साथ कार्यक्रम के अंतिम चरण में कई ऐसे प्रश्न उठे जैसे- हम वैज्ञानिक उपलब्धियों को पाने में इतने पीछे क्यों हैं? जिनके जवाब भी अपने आपमें ही एक प्रश्न थे। इन प्रश्नों ने हमें अपने बीते हुए कल और आने वाले भविष्य के बारे में सोचने पर मजबूर तो किया ही लेकिन आगे बढ़ने का हौसला भी दिया।

## सीएसआईआर-सीरी में विश्व हिन्दी दिवस 2019 के अन्तर्गत एक-दिवसीय प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन



अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए स्थानापन्न निदेशक डॉ जमील अख्तर

**सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में 10 जनवरी, 2019 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के स्थानापन्न निदेशक डॉ जमील अख्तर, मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में डॉ प्रमोद कुमार खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अन्य सदस्य, वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी उपस्थित थे।**

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ जमील अख्तर ने सभी सहकर्मियों को विश्व हिन्दी दिवस की बधाई दी। उपस्थित सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने इस आयोजन की प्रासंगिकता व महत्व की चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से सभी सहकर्मियों में न केवल भाषा के प्रति अपने दायित्व का अहसास होता है

अपितु उसके प्रति सम्मान की भावना भी बढ़ती है। उन्होंने हिन्दी के बढ़ते प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि सरकारी व गैर-सरकारी प्रयासों के बल पर विश्व में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ी है। उन्होंने इसके लिए विदेशों में रह रहे भारतवंशियों के योगदान की भी सराहना की। उन्होंने संस्थान में स्पीच टु टेक्स्ट संबंधी शोध कार्य को रेखांकित करते हुए वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि हमें इस दिशा में अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ाना होगा ताकि जनमानस उससे अधिक लाभान्वित हो सके। अंत में उन्होंने कार्यशाला के आयोजन की प्रशंसा करते हुए उसकी सफलता की कामना की और सभी सहकर्मियों को पुनः विश्व हिन्दी दिवस की बधाई दी।

इस अवसर पर सहकर्मियों को संबोधित करते हुए संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं मुख्य वैज्ञानिक डॉ पी के खन्ना ने भी



कार्यशाला की रूपरेखा की जानकारी देते हुए मुख्य वैज्ञानिक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य डॉ प्रमोद कुमार खन्ना

उद्घाटन सत्र में उपस्थित वैज्ञानिक एवं सहकर्मी

सभी को विश्व हिन्दी दिवस की बधाई दी और इस उपलक्ष्य में संस्थान में आयोजित की जा रही एक दिवसीय प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला के आयोजन की रूपरेखा

पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में उन्होंने कार्यशाला के आयोजन, विषयों के चयन आदि के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इन महत्वपूर्ण व उपयोगी

विषयों पर दिए जाने वाले व्याख्यानों से सभी प्रतिभागी लाभान्वित होंगे।

कार्यक्रम का संचालन हिन्दी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने किया। उन्होंने सहकर्मियों को विश्व हिन्दी दिवस और



प्रस्तुतीकरण देते हुए वक्ता - श्री रमेश बौरा, श्री महेन्द्र सिंह, श्री राजेश पारीक, श्री पंकज गोस्वामी, डॉ. अनिल सैनी

हिन्दीदिवस का अंतर स्पष्ट करते हुए दोनों अवसरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विश्व हिन्दी दिवस मनाने की शुरुआत 10 जनवरी, 2006 से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने की जबकि विश्व हिन्दी सम्मेलन वर्ष 1975 से आयोजित किए जा रहे हैं तथा अब तक 11 सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं।

संचालन के दौरान श्री रमेश बौरा ने बताया कि देश-विदेश में हिन्दी प्रेमी



भी अपने-अपने स्तर पर हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। इस कार्य में उन प्रवासी भारतीयों का भी बहुत योगदान है जो वर्षों पूर्व काम-काज के लिए मलेयेशिया, मॉरिशस, कंबोडिया, थाइलैंड, सूडान, जमैका, त्रिनिदाद-टोबैगो के अलावा दक्षिण अफ्रीकी देशों में गए और वहीं बस गए। उन्होंने अपने परिश्रम से वहाँ स्वयं को स्थापित किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान व राष्ट्र भाषा प्रत्येक नागरिक के लिए अत्यंत सम्मान का विषय होते हैं तथा हमारा दायित्व है कि हम प्रत्येक स्थिति में इस बात का ध्यान रखें।

इससे पूर्व उद्घाटन सत्र में श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी(सामान्य) ने सभी सहकर्मियों के समक्ष विश्व हिन्दीदिवस के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संदेश पढ़ा। अंत में उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस कार्यक्रम को मूर्तरूप देने और मार्गदर्शन के लिए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी को तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी सहकर्मियों को धन्यवाद दिया।

## एक दिवसीय प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में पूर्ण दिवसीय प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला के दौरान तीन सत्रों में निम्न व्याख्यान/प्रस्तुतीकरण दिए गए-

### सत्र 1.

- (1) राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट
- (2) संस्थान की राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएँ

वक्ता - श्री रमेश बौरा, हिन्दी अधिकारी

- (3) पेन्शन तथा सेवानिवृत्ति लाभ वक्ता - श्री राजेश पारीक, वित्त एवं लेखा नियंत्रक

### सत्र 2.

- (1) अवकाश नियम

वक्ता - श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी

- (2) फोनेटिक एवं वॉयस टाइपिंग

वक्ता - श्री रमेश बौरा, हिन्दी अधिकारी

### सत्र 3.

- (1) सामान्य प्रशासनिक दिशानिर्देश (टीए, एलटीसी, बिल, आरटीआई) वक्ता द्व श्री पंकज गोस्वामी, अनुभाग अधिकारी

- (2) GeM के माध्यम से क्रय - प्रक्रिया व महत्वपूर्ण बिंदु वक्ता - डॉ अनिल सैनी, वैज्ञानिक

प्रत्येक सत्र में वक्ताओं ने विषय को विस्तार से समझाने का प्रयास किया और प्रतिभागियों ने वक्ताओं से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की। प्रतिभागियों ने कार्यशाला के विषयों के चयन के लिए आयोजक मंडल की सराहना की और कहा कि सहकर्मियों के लाभार्थ इस प्रकार के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएँ।

समापन सत्र में आयोजन के संयोजक श्री रमेश बौरा, हिन्दी अधिकारी ने सभी वक्ताओं व कार्यशाला के प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अनुमोदन से इस प्रकार के आयोजन किए जाएँगे।

## इंडियन साइंस कम्म्यूनिकेशन कांग्रेस भारत में विज्ञान पत्रकारिता के 200 वर्ष

भारतीय परिप्रेक्ष्य में विज्ञान संचार की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में झाँका जाए, भारतीय विज्ञान वहाँ विद्यमान मिलता है। संचार के परिप्रेक्ष्य में आज भी अनेक आद्य-ज्ञान हमारे ग्रन्थों और जनश्रुतियों तक सीमित हैं जिन्हें संचार के विविध माध्यमों के जरिए सब तक पहुँचाने की आवश्यकता है। ऐसे ही अनेकों उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 20 एवं 21 दिसम्बर 2018 को नई दिल्ली में दो दिवसीय इंडियन साइंस कम्म्यूनिकेशन कांग्रेस (आईएससीसी 2018) का आयोजन किया गया।

इस दो दिवसीय इंडियन साइंस कम्म्यूनिकेशन कांग्रेस का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सीएसआईआर-निस्केयर), भारतीय विज्ञान लेखक संघ (इसवा), इंडियन साइंस कम्म्यूनिकेशन सोसाइटी (इस्कास) एवं सोसाइटी फॉर इन्फॉर्मेशन साइंस (एसआईएस) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

18वीं इण्डियन साइंस कम्म्यूनिकेशन कांग्रेस में भारतीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान के निदेशक डॉ. मनोज कुमार पटैरिया ने अपने स्वागत भाषण में भारत में विज्ञान पत्रकारिता के 200 वर्ष के क्रमिक विकास की विस्तृत चर्चा की तथा कहा कि विज्ञान संचार की दिशा में अभी बहुत काम करने की जरूरत है। उन्होंने विज्ञान संचार के प्रथम प्रमाण के रूप में वर्ष 1818 में प्रकाशित दिग्दर्शन पत्रिका का विशेष उल्लेख किया तथा कहा कि आज हम सूचनाओं के विस्फोट के दौर से गुजर रहे हैं। प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया ने सूचनाओं का अंबार लगा दिया है



परन्तु हमें समाजोपयोगी, तार्किक एवं उचित सूचनाओं को संचित कर स्वयं, समाज, राष्ट्र तथा विश्व कल्याण हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। इण्डियन साइंस फिक्शन राइटर्स एसोसिएशन के सचिव डॉ. अरविन्द मिश्र ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा लोकप्रिय विज्ञान लेखन में आने वाली समस्याओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भाषा की सूक्ष्मताओं से जुड़ना विज्ञान पत्रकारिता के लिए आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि एवं अध्यक्ष, फोरम ऑन डिजास्टर मिटिगेशन, भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी (आईएनएई), डॉ. आर. के. भण्डारी ने आपदाओं के दस्तावेजीकरण एवं उसके संचार की बात की। उन्होंने कहा कि हमें आपदाओं से भी सीखने का कोई अवसर खोना नहीं चाहिए तथा उस सीख से भविष्य की आपदाओं को कम करने अथवा उसे समाप्त करने के लिए कार्य करना चाहिए।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विज्ञान संचारक एवं कलिंगा पुरस्कार विजेता डॉ. नरेन्द्र कुमार सहगल ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि आज के समय में विज्ञान



सभा को सम्बोधित करते सीएसआईआर-निस्केयर के निदेशक डॉ. मनोज कुमार पट्टेरिया

संचारकों के सामने मीडिया द्वारा प्रसारित भ्रांतियों को दूर करना एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने कुंभ जैसे मेलों का उपयोग विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए भी करने की बात कही तथा चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया में विज्ञान कवरेज निरन्तर कम होती जा रही है।

दो दिन तक चली भारतीय विज्ञान संचार कांग्रेस में छः तकनीकी सत्रों में अनेकों शोधपरक प्रस्तुतीकरण हुए। इसके अलावा पोस्टर प्रजेंटेशन द्वारा विज्ञान संचार

के विभिन्न उपायों का प्रस्तुतीकरण हुआ। एन.आई.ए.एस. बेंगलुरु के प्रो. एम. साई बाबा ने साइंस एट होम की आवश्यकता बताते हुए कहा कि वैज्ञानिकों एवं विज्ञान संचारकों में संवाद होना चाहिए। शिक्षकों को विज्ञान संचारक की भूमिका निभानी होगी। आई.आई.एम.सी. के निदेशक प्रो. के.जी. सुरेश ने कहा कि जब तक विज्ञान संचार से लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन न आए, तब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों, विज्ञान संचारकों को समस्याएं उठाने के साथ ही समाधान भी देना चाहिए। विज्ञान कार्टून (साइंटून) के जन्मदाता डॉ. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने प्रकृति से विज्ञान कैसे सीखें, विषय पर अपना रोचक व्याख्यान दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो कृष्ण लाल ने कहा कि विज्ञान का प्रसार उतना ही जरूरी है जितना कि नई-नई खोज करना।

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) की प्रमुख डॉ निशा मेंदीरता, प्रमुख, एनसीएसटीसी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं के जरिए अधिक से अधिक लोगों तक विज्ञान को पहुंचाया जा सकता है। त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो विजय धारुरकर ने कहा कि विज्ञान पत्रकारिता का काम है कि वह विशेष ज्ञान का साधारणीकरण करे। वैज्ञानिक डॉ बी के त्यागी ने कहा कि लोगों को नई तकनीक से पैदा हो रहे खतरों के बारे में बताना भी बहुत जरूरी है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि वैज्ञानिक शोधों के अनुसार शराब किसी भी मात्रा में हानिकारक है लेकिन कुछ स्रोतों से ऐसी सूचनाएं फैलायी जाती हैं कि सीमित मात्रा में शराब स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। ऐसे ही बहुत-सी कंपनियां चाय, चाकलेट आदि के बारे में सकारात्मक समाचार प्रचारित



विज्ञान लेखन की समस्याओं से अवगत कराते डॉ. अरविन्द मिश्र

कर लोगों को धोखा दे रही हैं। वहीं पुणे के विज्ञान संचारक श्री अभय एस राजपूत ने विज्ञान के नाम पर फैल रही झूठी खबरों से सतर्क रहने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इनवेस्टिगेटिव साइंस जर्नलिज्म को आज की सबसे बड़ी जरूरत बताया।

अन्ना यूनीवर्सिटी, चेन्नई के डॉ आर्इ अरुल आरुम ने प्रभावी विज्ञान संचार हेतु क्षेत्रीय भाषाओं में संचार की अपील की। विज्ञान संचारक डॉ अनूप चतुर्वेदी ने वैज्ञानिकों एवं पत्रकारों के परस्पर सामंजस्य को स्थापित करने की वकालत

की। लखनऊ विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो ए पी सिंह ने प्राचीन काल से ही भारत के समृद्धशाली वैज्ञानिक ज्ञान की चर्चा करते हुए कहा कि हमारी जनजातियों में भी विज्ञान ही अच्छी समझ है। उनसे भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

राज्यसभा टीवी के पूर्व कार्यकारी निदेशक राजेश बादल ने भारतीय प्राचीन ग्रंथों में दिए गए विज्ञान को सामने लाने की जरूरत बतायी।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज मिश्र ने सब्जियों एवं फसलों पर कीटनाशकों एवं रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते अंधाधुंध उपयोग एवं उसके रोकथाम संबंधी उपायों पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। वहीं पंकज प्रसून ने विज्ञान कविताएं प्रस्तुत कर कवियों से अपील की कि वे विज्ञान संचार में अपनी भूमिका निभाएं। राजस्थान से प्रकाशित समाचार-पत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संपादक तरुण जैन ने कहा कि सरकार को विज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगी पत्र-पत्रिकाओं को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए,

जिससे उनकी प्रसार संख्या बढ़े और वे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचें। साथ ही नई पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयंत सहस्रबुद्धे ने कहा कि पत्रकारिता विज्ञान को जनसामान्य तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कहा कि देश को विकास पथ पर तेजी से ले जाने में विज्ञान संचारक अहम भूमिका निभा सकते हैं। कांग्रेस के दौरान विभिन्न वक्ताओं ने कहा कि यदि विज्ञान प्रयोगशालाओं और शैक्षिक संस्थानों तक ही सीमित रह जाए तो इसकी कोई सार्थकता नहीं है। इसलिए यह बेहद आवश्यक है कि वैज्ञानिक ज्ञान आम लोगों तक पहुंचे, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके। विज्ञान संचार कांग्रेस में अन्य कई विशेषज्ञों एवं विद्यार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में इंडियन साइंस राइटर्स एसोसिएशन (इसवा) की बैठक हुई, जिसमें संस्था के कार्यों को और अधिक गति देने पर चर्चा की गई।



कार्यक्रम में डॉ. आर. के. भंडारी की पुस्तक का विमोचन करते गणमान्य अतिथि

## आईआईसीटी ने जीसीसीआई, अहमदाबाद के साथ समझौता किया

गुजरात चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद के सहयोग से 03 जनवरी 2019 को एक उद्योग परिसंवाद मीट का आयोजन किया ताकि संस्थान के वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान तथा उद्योगों की आवश्यकता पर आधारित एक सशक्त सम्बन्ध का निर्माण हो सके। सीएसआईआर-आईआईसीटी तथा जीसीसीआई के वरिष्ठ अधिकारी शीघ्र ही समझौते को अन्तिम रूप देंगे ताकि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय संस्थान की प्रौद्योगिकी पर सुलभता प्राप्त कर सके। इसमें एमएसएमई के लिए प्रौद्योगिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (टीओटी) तथा बहिःस्त्राव उपचार सम्मिलित होंगे।

चर्चा के दौरान डॉ. जैमिन वासा, अध्यक्ष, जीसीसीआई ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईसीटी तथा जीसीसीआई के इस संयुक्त प्रयास के द्वारा वे अहमदाबाद तथा आसपास के क्षेत्रों के



डॉ. जैमिन वासा, अध्यक्ष, जीसीसीआई तथा डॉ एस चन्द्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीटी

रासायनिक, फार्मास्यूटिकल, एग्रोकैमिकल तथा पर्यावरण उद्योग के लिए एक मंच सृजित करना चाहते हैं तथा संस्थान के साथ उद्योग की आशाओं को और अधिक सुविधा देना चाहते हैं।

डॉ. चन्द्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद ने निर्दिष्ट किया कि संस्थान के पास विशेषज्ञता

है तथा वैज्ञानिकों का एक बड़ा समूह कार्बनिक विश्लेषण, उत्प्रेरण, रासायनिक अभियांत्रिकी तथा पर्यावरणीय प्रबन्धन के लिए कार्य कर रहा है। वे उद्योग के साथ पूरक के रूप में निकटता से कार्य करते हैं ताकि उनकी आर एंड डी सशक्ताओं के द्वारा वे और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बन सकें।



सीएसआईआर-आईआईसीटी तथा जीसीसीआई के वरिष्ठ अधिकारीगण

## सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने जेएसएस विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए



समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान करते हुए अधिकारीगण

**सीएसआईआर-केन्द्रीय** खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, मैसूर ने जेएसएस विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मैसूर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं ताकि अनुसंधान कार्यों को और अधिक तीव्रता मिले तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्यवर्धक भोजन तथा मशीन प्रज्ञता पर अनुसंधान में सहायता मिल सके।

यह कार्यशाला, संगोष्ठी तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में भी सहायक होगा।

समझौता ज्ञापन पर 03 जनवरी 2019 को शिवरात्रि देशीकेन्द्र स्वामीजी, सन्तुर मठ की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. बी.जी. संगमेश्वर के अनुसार अनुसंधान में प्रौन्नति के साथ-साथ नवीन अनुसंधानों

को इस नवीनतम प्रारम्भ के द्वारा पूर्ण किया जा सकता है।

निदेशक, सीएसआईआर-सीएफटी-आरआई, डॉ. राघवेन्द्र राव ने निर्दिष्ट किया कि सहयोगात्मक विकास के लिए अपार सम्भावनाएं हैं तथा इसका समाज में उभरती उद्योग आवश्यकताओं पर लाभदायक प्रभाव पड़ेगा।

## सीएसआईआर-आईआईटीआर ने सीएसआईआर-सीमैप में आयोजित किसान मेले में भाग लिया

**सीएसआईआर-भारतीय** विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आईआईटीआर), लखनऊ ने 31 जनवरी 2019 को सीमैप परिसर में आयोजित किसान मेले में भाग

लिया। इस समारोह का उद्घाटन डॉ. मंगल राय, पूर्व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा किया गया। उत्तरप्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा,

मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु तथा अन्य प्रदेशों से लगभग 300 से अधिक किसान इस मेले में उपस्थित हुए।



पुरानीर से जल का उपयोग करते आगन्तुक



कृषि मेले में उपस्थित लोगों की झलकियां

जल विसंक्रमण प्रणाली (ओनीर) आर्जेमोन ऑयल अडल्टरेशन डिटेक्शन किट, बटर येलो अडल्टरेशन डिटेक्शन किट इत्यादि सहित सीएसआईआर-आईआईटीआर द्वारा स्वच्छ जल एवं खाद्य पदार्थ पर विकसित प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया

गया। सीएसआईआर-आईआईटीआर की टीम ने स्वच्छ खाद्य पदार्थ, स्वच्छ जल, महिला स्वास्थ्य, प्लास्टिक के प्रयोग से बुरा प्रभाव तथा पर्यावरणीय सुरक्षा विषयों पर जन-जागरूकता हेतु लोगों को एक सूचना परक विवरणिका वितरित की।

सीएसआईआर-आईआईटीआर द्वारा विकसित (ओनीर) जल विसंक्रमण प्रौद्योगिकी पर आधारित पुरानीर की एक पूर्णरूपेण संचालन इकाई जिसका व्यवसायीकरण एसएस मैजर टेक्नोलॉजीज प्रा.लि. द्वारा किया गया है, को इस समारोह में संस्थापित किया गया था। यह कृषि मेले का एक मुख्य आकर्षण था। लगभग 2500 से अधिक किसानों ने पुरानीर के जल का प्रयोग किया तथा अत्यन्त सकारात्मक फीडबैक प्रदान किया।